दर्शन एवं विज्ञान के बीच अंतर्सम्बन्ध

यास्पर्स अस्तित्ववाद के ईश्वरवादी परम्परा के प्रतिनिधि हैं। प्रारम्भ में दर्शन एक प्रकार का सामान्य विज्ञान समझा जाता था। यह वह समय था जबकि विशिष्ट प्रकार के विज्ञान न तो आविर्भूत ही हुए थे और न विकसित ही हुए थे। परन्तु इनके आविर्भाव के पश्चात् लोगों ने दर्शनशास्त्र को या तो तर्कशास्त्र या संवृति शास्त्र या ज्ञानमीमांसा बनाकर छोड़ दिया। यास्पर्स ने दर्शन और विज्ञान के क्षेत्रों का विभाजन करने का प्रयास किया ताकि वे अपने संबंधित क्षेत्रों में बिना किसी संघर्ष एवम् भ्रम के उचित भूमिका का निर्वाह कर सके। इसके लिए यास्पर्स सत्ता के तीन स्तरों का विवेचन एवम् विभेद करते हैं। सत्ता के तीन स्तर यह है : वस्तुगत सत्ता, आत्मगत् सत्ता व्यक्तिगत सत्ता और अतीन्द्रिय सत्ता। वस्तुगत सत्ता विज्ञान का जगत है। यह प्रदत्त वाह्य जगत् है। यह स्थाई वस्तुओं का जगत् है। विज्ञान के इस जगत में प्रत्येक ज्ञेय एक वस्तु है। इसके विषय में जो ज्ञात है, वह सार्वभौमिक रूप से ज्ञेय और मान्य है।

विज्ञान परक दृष्टिकोण वाले बहुत से लोग यह मानते हैं कि विज्ञान का जगत् मानवीय ज्ञान के क्षेत्र की सीमा है। इसके परे कुछ नहीं है। ऐसे लोग विज्ञान को सभी वस्तुओं का प्रतिमान मान लेते हैं, परन्तु यास्पर्स ने इस दावे के खोखलेपन को, विज्ञान की सीमाओं को उल्लेख करते हुए स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वस्तुतः विज्ञान पूर्ण वस्तुपरता के आदर्श को प्राप्त करने में असमर्थ है। यदि यह लक्ष्य प्राप्त हो जाता है तो हमारा ज्ञान पूर्ण होता है, परन्तु चेतना के भिन्न आयाम और प्रकार है जो उक्त ज्ञान की परिधि में नहीं आते है।

यास्पर्स के अनुसार समग्र जगत् ज्ञेय नहीं है, यह वाक्य कि जगत् ज्ञेय है, दो अर्थों में ग्रहण किया जा सकता है। एक तो जगत् के अन्तर्गत् जो वस्तुऐं

*दर्शनशास्त्र विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Scanned with CamScanner

है, वह ज्ञेय है और दूसरे यह कि जगत् सत्ता की पूर्ण इकाई के रूप में ज्ञेय है। जहाँ तक जगत् की वस्तुओं के ज्ञान का प्रश्न है विज्ञान वहाँ तक पूर्ण रूप से सक्षम है, परन्तु विज्ञान समग्र जगत् का ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ है। समग्र जगत् तो कांट के शब्दों में एक आदर्श परक प्रत्यय होगा, जो कि वैज्ञानिक परीक्षणों को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा, परन्तु अपने स्वयं वैज्ञानिक परीक्षण का विषय कदापि नहीं बनेगा।

विज्ञान हमें स्पष्टता प्रदान कर सकता है परन्तु वह हमें एकता और समग्रता नहीं दे सकता है। विज्ञान विषयी और विषय तथा चेतना और सभी इन्द्रिय जन्य वस्तुओं के विभेद को समाप्त नहीं कर सकता है। विषयी के व्यक्तिगत् जगत् और वस्तुओं के सार्वजनिक जगत् का तनाव और संघर्ष शाश्वत् है। विज्ञान इस तनाव की परिधि में कार्य करता है, और एकता के लक्ष्य को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता है। यास्पर्स ने विषयी भाव को चार स्तरों में विभक्त किया है : जड़ पदार्थ, जीव विषय, चेतना और आत्मा। इन स्तरों में परस्पर मूलभूत अंतर है। एक की व्याख्या दूसरे के द्वारा नहीं हो सकती है। विज्ञान अलग-अलग विधियों से इन सबका अध्ययन करता है। विज्ञान की दो विधियों में परस्पर विलगाव है। वैज्ञानिक ज्ञान सार्वभौमिक होते हुए भी सापेक्ष होता है।

यास्पर्स मानते हैं कि सत्ता मात्र वस्तु ही नहीं है। आत्मा मात्र विषय या वस्तु नहीं है, देकार्त के विरुद्ध यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने उस आत्मा को ही जो कि जड़ पदार्थ से सम्बन्धित है, पूर्ण आत्मा मान लिया था। मनुष्य केवल वस्तु मात्र ही नहीं है। वह अस्तित्व और स्वतन्त्र है। अस्तित्व मनुष्य का अवस्तु परक पक्ष है और उसकी स्वतंत्रता का तात्पर्य है चुनाव की स्वतन्त्रता। इस प्रकार विज्ञान सत्ता का स्तर तक ही अपने को सीमित रखता है जबकि दर्शन समग्र सत्ता का अध्ययन करता है। दार्शनिक सत्ता के तीनों स्तरों : वस्तुगत, आत्मगत् और अतीन्द्रिय में सम्मिलित होता है। वस्तुगत् जगत् का जो ज्ञान विषय प्रस्तुत करता है उसमें दर्शन कुछ भी जोड़ नहीं सकता है। दर्शन भी विज्ञान पर आधारित नहीं है। दर्शन मनुष्य और समग्र जगत् की अनुभूति पर आधारित नहीं है। दार्शनिक अनुभूति जो कि वैज्ञानिक ज्ञान से भिन्न है, वस्तुतः विषय और विषयी के विभेद से मुक्त है। यह वस्तु परक है। अतएव इसमें विषय-विषयी का द्वैत नहीं है।

Scanned with CamScanner

...अनुभूति इन दोनों तत्वों की सत्ता को एक समग्रता के अन्दर समाहित ...ती है।

वैज्ञानिक ज्ञान की वैधता सार्वभौमिक है। विज्ञान का सत्य सभी व्यक्तियों ...लिए समान रूप से सत्य है। विज्ञान के सत्यों के संबंध में मतैक्य रहता है, परन्तु ...होते हुए भी विज्ञान के सत्य सापेक्ष ही रहते हैं इनकी सापेक्षता उस क्षेत्र ...के अर्न्तगत् कि इनका अध्ययन किया जाता है, तथा उस प्रणाली द्वारा इन ...अध्ययन किया जाता है, के प्रति होती है। वैज्ञानिक प्रत्ययों के माध्यम से जगत् ...समग्रता की कोई प्रतिमा बनाना असम्भव ही है। दार्शनिक की व्यक्तिगत् ...सत्य है। यह मेरा सत्य है और यह आवश्यक नहीं है कि मेरा आपके लिए भी ...सत्य हो। परन्तु इतना होते हुए भी यह निरपेक्ष है क्योंकि इस सत्य की वैधता ...अभिव्यक्ति मैं अपने अस्तित्व की समग्रता से करता हूँ।

विज्ञान और तकनीकी का दर्शन पर अत्यन्त सशक्त प्रभाव पड़ रहा है। ...लौकिक लोक-दर्शन को विज्ञान के धरातल पर ले जाने के लिए प्रयत्नशील है। ...इस प्रवृति को "विज्ञान-वादी साम्राज्यवाद" की संज्ञा देते हैं। विज्ञान परता (Scientism) वैज्ञानिक ज्ञान के कुछ क्षेत्रों का सैद्धान्तिक निरपेक्षीकरण है जो कि ...करने को दर्शन समझती है और विज्ञान से सब कुछ प्रदान करने की क्षमता ...की अपेक्षा करती है।

विज्ञान को सभी मूल्यों की मीमांसा करने का निर्देश देती है। यास्पर्स ...सत्ता का खंडन करते हुए प्रत्ययवाद और प्रत्यक्षवाद दोनों की आलोचना ...है। प्रत्यक्षवाद और प्रत्ययवाद प्रायः दोनों ही यह मानते हैं कि दार्शनिक ...समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक विधियों से किया जा सकता है। लोत्से जैसे ...वादियों ने ईश्वर, आत्मा स्वतन्त्रता और नैतिक उत्तरदायित्व जैसी दार्शनिक ...समस्याओं का वैज्ञानिक परम्पराओं के आधार पर समाधान करने का प्रयास किया। ...प्रत्ययवादी दार्शनिक प्रत्येक वस्तु को मन या चेतना पर आश्रित मानता है। ...प्रत्येक वस्तु को मन या चेतना की अभिव्यक्ति मानना, व्यक्ति और सत्ता ...का निरादर और निराकरण करना है। व्यक्ति और सत्ता यास्पर्स के अनुसार ...चेतना के आधार पर नहीं समझे जा सकते हैं। दर्शन की यह विज्ञानों के ...की प्रवृत्ति ही प्रत्यक्षवाद का मार्ग प्रशस्त करती है।

विज्ञान परता ने प्रत्यक्षवाद को इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए प्रेरित किया है कि विज्ञान जगत् से परे कोई सत्ता नहीं है। विज्ञान-जगत् की परिधि ही वस्तुतः सत्ता के जगत् की परिधि है। विज्ञान प्रदत्त सत्य ही एक मात्र सत्य है। विज्ञान से परे कुछ नहीं है। ईश्वर, आत्मा, स्वतन्त्रता आदि मन की कल्पना मात्र है। क्योंकि विज्ञान इनके संबंध में किसी प्रमाणिक निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता है। प्रत्यक्षवाद ने मनुष्य को यह निर्देश दिया कि वह कल्पनाओं के पीछे भटकने में अपना समय न व्यर्थ करें।

इस सम्बन्ध में हुसर्ल की भी आलोचना यास्पर्स ने की है। हुसर्ल का पूरे अस्तित्ववादी दर्शन पर स्पष्ट प्रभाव है। यास्पर्स उनके इस प्रयास की कटु आलोचना करते हैं कि दर्शन को विज्ञान के धरातल पर उतारा जा सकता है। हुसर्ल के अनुसार संवृति शास्त्र ही दर्शन को विज्ञान की परिधि के अन्तर्गत् ले आने वाले अत्यन्त वांछनीय प्रयास में सक्षम है। हुसर्ल देकार्त से भी अत्यन्त प्रभावित है। देकार्त ने तो विज्ञान की पूजा ही की थी। यास्पर्स ने हुसर्ल की आलोचना के साथ-साथ देकार्त की भी इस विचार की आलोचना की है दर्शन गणित है। दर्शन ने गणित का अनुकरण इसलिए किया था ताकि वह उसकी पद्धति से कुछ ग्रहण कर सकें। परन्तु ऐसा करने के प्रयास में देकार्त आदि बुद्धिवादी दार्शनिकों ने गणित से सीखने के बजाय दर्शन को गणित का अनुचर और सेवक ही बना दिया।

यास्पर्स विज्ञान की आलोचना के सन्दर्भ में नीत्से की भी आलोचना करते हैं। नीत्से ने स्वयं विज्ञान में सत्य की आलोचना की है। परन्तु उन्होंने स्वयं वैज्ञानिक ज्ञान के एक अंश का निरपेक्षीकरण करके उसे दार्शनिक समग्रता में परिणित करने का प्रयास किया है। दर्शन और विज्ञान दोनों की विधि और लक्ष्य में प्रदारगत् अन्तर है। परन्तु इसका आशय यह नहीं है। वह एक के लिए व्यर्थ है। वह एक दूसरे के लिए अपरिहार्य है।

दर्शन ही विज्ञान का क्षेत्र निर्धारित करता है और उसके अर्थ की भी व्याख्या करता है। विज्ञान को उसकी परिधि और सीमा बताकर जहाँ एक ओर दर्शन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जनकल्याण में अपना विशिष्ट योगदान दे सकता है और ज्ञान के भण्डार में भी अभिवृत्ति कर सकता है और वहीं दूसरे और वह उसका नियमन भी करता है। अपने क्षेत्रों में विज्ञान की क्षमता उल्लेखनीय

Scanned with CamScanner

है: चाहे वह चिकित्सा हो या तकनीकी। परन्तु जब विज्ञान ऐसे क्षेत्रों में हाथ डालने का प्रयास करता है जो कि वस्तु परता के क्षेत्र के बाहर है तो वह केवल अपने समय और क्षमता को बर्बाद करता है। इस प्रकार यास्पर्स के दर्शन में दर्शन और विज्ञान की अवधारणा पर विचार करें तो हम कह सकते हैं कि सत्ता की समग्रता वस्तुपरक या विज्ञान परक ज्ञान कोटियों के माध्यम से न तो ज्ञेय है और न ही अभिव्यक्ति की जा सकती है, वैज्ञानिक ज्ञान अपनी प्रौढ़ता की सीमा पर पहुँच कर सत्ता की समग्रता की अभिव्यक्ति के लिए अपर्याप्त और अक्षम हो जाता है, वहीं विज्ञान के उत्तरदायित्व को दर्शन ग्रहण कर लेता है। यास्पर्स जगत् को दर्शन के लिए आवश्यक मानते हैं। ऐसा दार्शनिक जो जगत् की सत्ता और [illegible] को नहीं मानता वह दर्शन तक नहीं पहुँच सकता है। परन्तु यास्पर्स के अनुसार वैज्ञानिक जगत् सत्ता की समग्रता की अभिव्यक्ति प्रत्यक्षतः नहीं करता है। इस प्रकार जहाँ एक ओर दर्शन विज्ञान की सीमा निर्धारित करता है, और विज्ञान [illegible] में उसके निष्कर्षों और उपलब्धियों को नियमित करता है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान भी अपनी वस्तु परक कोटियों के माध्यम से दार्शनिक सत्य की अभिव्यक्ति [illegible] में दर्शन की सहायता करता है।

[illegible]

Scanned with CamScanner

CamScanner 05-02....pdf

Scanned with CamScanner